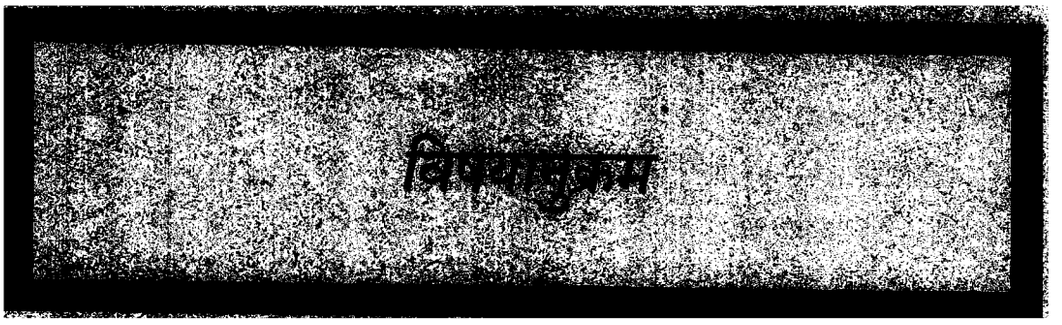
विषयानुक्रम

विषयानुक्रम

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय :शिवानी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1 –16

१:१ व्यक्तित्व
१:१:१ जीवनवृत्त
१:१:२ पिता
१:१:३ माता
१:१:४ पितामह
१:१:५ नाना – नानी
१:१:६ भाई – बहन
१:१:७ बचपन और शिक्षा
१:१:८ वैवाहिक जीवन
१:१:९ परिवार
१:१:१० प्रथम कृत्ति
१:१:११ पुरस्कार
१:१:१२ प्रतिभा
१:१:१३ घुमक्कडी वृत्ति
१:२ कृतित्व
१:२:१ बड़े उपन्यास
१:२:२ लघु उपन्यास
१:२:३ कहानी संग्रह
१:२:४ संस्मरण
१:२:५ रिपोतार्ज
१:२:६ यात्रा वृत्त
१:२:७ निबंध संग्रह
१:२:८ बाल साहित्य
१:२:९ विविध,
१:३ निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : 'कृष्णकली' का कथानक 17 – 37

२:१ उपन्यास का स्वरूप
२:२ कथावस्तु का स्वरूप
२:३ कृष्णकली उपन्यास का कथानक
२:४ निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : ' कृष्णकली' पात्रों का सामान्य परिचय 38 – 66

३:१ कथानक के अधारपर पात्रों के भेद
३:२ चरित्र-चित्रण के गुण
३:२:१ अनुकूलता
३:२:२ सप्रमाणता
३:२:३ सहृदयता
३:२:४ मौलिकता
३:३ 'कृष्णकली' प्रमुख नारी पात्र
३:३:१ 'कृष्णकली' उपन्यास की नायिका
३:३:२ पार्वती
३:३:३ मुनीर
३:३:४ माणिक
३:३:५ पन्ना
३:३:६ वाणी – सेन
३:३:७ रोजी
३:३:८ अम्मा
३:३:९ जया – माया
३:३:१० रेवती शरण की पुत्र वधु चम्पा
३:३:११ कुन्नी
३:३:१२ मैगी
३:३:१३ आण्टी
३:३:१४ विवियन
३:४ 'कृष्णकली' : प्रमुख पुरूष पात्र
३:४:१ प्रवीर
३:४:२ विद्युत रंजन मजूमदार
३:४:३ दामोदर

३:४:४ असदुल्ला
३:४:५ पाण्डेजी
३:४:६ रजनीकान्त
३:५ निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : ' कृष्णकली' का प्रतिपाद्य 67 – 84
४:१ उद्देश्य प्रकटीकरण की प्रणालियाँ
४:२ कृष्णकली उपन्यास का प्रतिपाद्य
४:२:१ मानसिक वृत्तियों की जटिलता से जुझती नारी
४:२:२ समाज का एक कोढ : वेश्या रूप में नारी
४:२:३ सौंदर्याकर्षण का शिकार : नारी,
४:२:४ मनोरूग्ण तथा अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त नारी
४:२:५ परिस्थिति के दायरे में फँसा नपुसक बना पुरूष
४:२:६ भ्रष्टाचार के परिणामों की ओर संकेत
४:२:७ पूँजीपतियों की स्वार्थपरकता
४:२:८ पाखण्डी साधु
४:३ निष्कर्ष

पंचम अध्याय : 'कृष्णकली' की भाषा - शैली 85 –107
५:१ भाषा
५:१:१ शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप
५:१:१:१ तत्सम शब्द
५:१:१:२ तद्भव शब्द
५:१:१:३ विदेशी शब्द
५:१:१:४ अरबी शब्द
५:१:१:५ फारसी शब्द
५:१:१:६ अंग्रेजी शब्द
५:१:१:७ अन्य शब्द
५:२ भाषा सौंदर्य के साधन
५:२:१ विशेषण

५:२:२	उपमान	
५:२:३	मुहावरे कहावतें	
५:२:४	सूक्तियाँ	
५:२:५	वाक्य - विन्यास	
५:२:६	पात्रानुकूल भाषा	
५:३	शैली	
५:३:१	वर्णनात्मक शैली	
५:३:२	आत्मकथात्मक शैली	
५:३:३	पत्र शैली	
५:३:४	नाटय शैली	
५:३:५	सांकेतिक शैली	
५:३:६	व्यंग्यात्मक शैली	
५:३:७	दृश्य शैली	
५:३:८	दिवा स्वप्न शैली	
५:३:९	विश्लेषणात्मक शैली	
५:३:१०	गेयात्मक शैली	
५:४	निष्कर्ष	
*	उपसंहार	108 – 113
*	संदर्भ ग्रंथ - सूची	114 – 115